

कलियुग में नाम संकीर्तन ही आधार : चैतन्य महाप्रभु

कृते यद्यपातो विष्णुम् त्रैतायाम् यजतोमरवै
द्वापर परिवर्याम् कल्प्ये तदहरिकीर्तिनाम्
सतयुग में ध्यान के द्वारा, त्रैत में यज द्वारा, द्वापर में
अर्बनों के द्वारा जो पुरुषार्थ लाभ होता है वह अब
कलियुग में श्री हरिकीर्तन द्वारा प्राप्त हो सकता है।
एतदर्थे अवतीर्ण श्री शशीकृतन

नदनदन श्रीकृष्ण ही श्रीराधारानी के भाव और
माध्यम रस को लेकर जो पूर्ण में किसी को नहीं दिया
गया, वही उन्नत-उन्नवल रस सभी साधारण लोगों
को देने के लिए कलियुग की प्रथम संध्या में श्रीगौर
सुन्दर, श्री धाम मायापुर, नवद्वीप, जिला नदिया, पश्चिम
बंगाल में सन 1486 की फल्गुनी पूर्णिमा तिथि में
संध्या काल में अवतीर्ण हुए थे। पिता श्री जगन्नाथ
प्रिंग तथा श्री माता शशी प्रेम की अवलंगन कर श्री
चैतन्य देव ने श्री कृष्ण प्रेम की अप्राकृत परम
कल्याणप्रयत्न कर्त्त्व किया इसलिए प्रतिवर्ष काल्पुणी
पूर्णिमा तिथि में उनके जन्म दिवस (अविर्भाव) के
उपलक्ष्य में भरत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में उनके
द्वारा प्रचारित श्री हरिनाम-संकीर्तन के साथ उनका
दिव्य जन्मोत्सव मनवा जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु
जी का जन्म श्री कंगा के टट पर उस समय हुआ
जब चन्द्रहण के समय असंख्यक लोग भागीरथी में
स्नान कर रहे थे तथा सभी जगह हरि बोल, हरि बोल,
शब्द गुजाराया हो रहा था।

ब्रजद्रनदन श्री कृष्ण जोकि भक्ति भाव को लेकर
अपने ही माध्यम का आस्वादन करने व युगधर्म श्री
हरिनाम संकीर्तन का प्रचार करने के लिए श्री चैतन्य
महाप्रभु जी के रूप में अवतीर्ण हुए। श्री चैतन्य
महाप्रभु जी को अवेनों नामों जैसे श्री गौर हरि, श्री
गौरांग, श्री नारायण, श्री चैतन्य देव, श्री कृष्ण
चैतन्य महाप्रभु व ब्रह्मन के नाम श्री निर्भाव इत्यादि से
भी प्रियतरा जाता है।

कलियुग के युगधर्म श्री हरिनाम संकीर्तन को प्रदान
करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने अपने पांचदों
श्री नित्यनानंद प्रभु, श्री अद्वैत, श्री गदाधर, श्री वास
आदि भक्तवंद के माध्यम से जीवों के कल्याण हेतु
गांव-गांव, नगर-नगर, शहर-शहर आदि जाकर श्री
हरिनाम संकीर्तन का प्रचार व प्रसार की शिक्षा दी।

नमो मध्यवादान्याय कृष्णप्रेमप्रदावदो

कृष्णायामैत्यनान्याय नारतिव्येनः नमः

श्री गूरु गोपाली महान विष्णु तथा जी ने श्री गौर
सुन्दर के प्राप्तानं मंत्र में कहा है- हे, वाताशिरोमणी,
कृष्ण प्रेप्रदावा, श्री कृष्णचैतन्य नाम धारी अर्थात्
श्रीकृष्ण अधिनन्, सर्व अवतारी, दयालु, गौर कनिनि
कृष्ण अपको नमस्कार है।

श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने मानव प्रणियों के उद्धर
के लिए शिखाएँ दी हैं। जो पूरे विश्व को देन है। श्री
चैतन्य महाप्रभु जी ने शिखाएँ विश्व के कल्याण हेतु
प्रदावदों की जो इस प्रकार है-

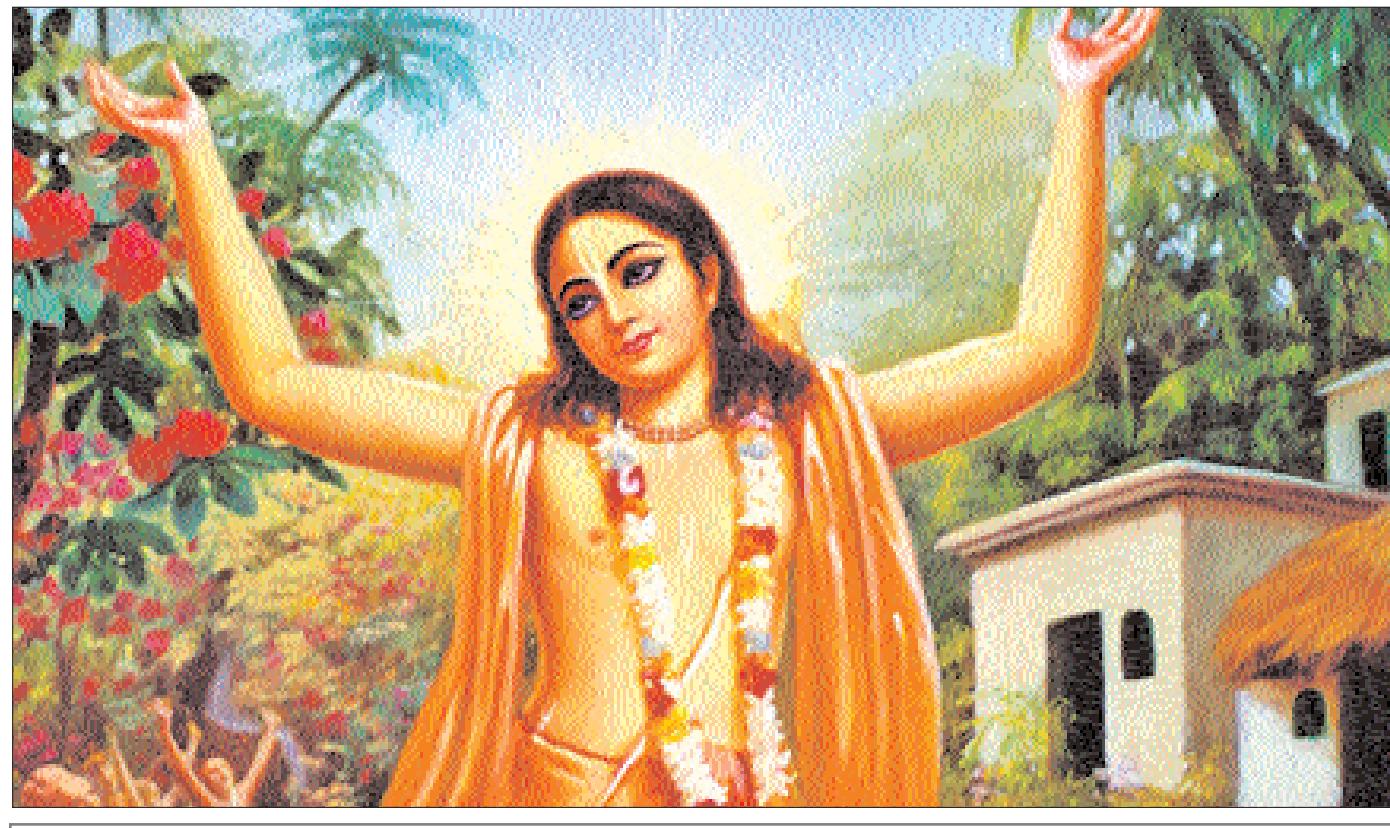
प्रथम शिक्षा : श्री हरिनाम का महात्म बताते हुए
श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं कि श्री कृष्ण नाम
संकीर्तन चित रूपी दर्शन को साक करने वाला,
संसारिक दावानल को समाप्त वाला, कल्याणकारी,
जीवनरूप, आनन्द देने वाला, आंतरिक पाप वृत्ति व जन्म
मृत्यु के चक्र के संहेषण के लिए छुकाकार दिलवाने
वाला संकीर्तन की जय हो।

द्वितीय शिक्षा : जीवों की भिन्न विश्वों को रखने
के लिए हे भगवान आपने अपने मुकुन्द, माधव,
गोविन्द, दामोदर, श्यामसुन्दर, धनश्याम, यशोदानंद
इत्यादि नाम रखे और प्रत्येक नाम में अपनी पूरी शक्ति
भी स्थापित कर दी। नाम लेने के लिए देश-काल,

शुद्धाशुद्धी का नियम बंधन तोड़ दिया लैकिन मंत्र
आपको नामों में अनुगम नहीं हुआ। आप कृपा करें
कि आपके नामों में मंरी रुचि हो सके।

तीसरी शिक्षा : संसार के जीवों को अपने धंमद,
अधिन को समाप्त करके जीव के तिनके जैसा निम्न
समझाना चाहिए। अर्थात् धंमद छोड़कर, पद प्रतिष्ठा
छोड़कर विषम स्वभाव होना चाहिए। पैद़ से भी
अधिक सहनशील होकर, खुद समाप्त की चाहना न
रखते हुए सदा श्री हरिनाम संकीर्तन करना चाहिए।

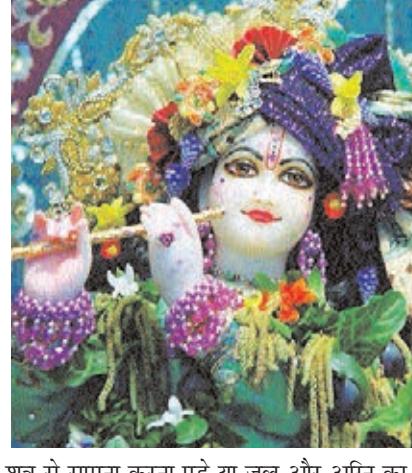
चौथी शिक्षा : हे जगतीय आप ऐसा आशावाद दें
कि मेरे में अत्यधिक धन, बहुत जन, पर्दित, सुदरो
आदि की चाहना न हो और आपके श्री चरणकमलों
मेरी जन्म-जन्म तक अहंकुरी भक्ति रहे।



धार्मिकता दुख को सुख में बदलता है

आज जीवन का जहाज उत्ताल तरोंगों और तुफानों
से भरे संसार सागर में भटक गया है। इसका
ऐतिक-बीव व विश्वासूचक बंब खराब हो गया है।
जीवन को गतिशील बनाने के लिए जीवन ऊर्जा
चाहिए, परंतु उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है उसका सही
दिशा में संयोजन। इसके अभाव में मनुष्य अनेक
प्रकार की विभिन्निकाओं के बीच खड़ा है। कभी
वह बीमारी से भयभीत रहता है, कभी उसे बुढापा
सताता है, कभी वह मौत से घबराता है। न जाने
किनने चेहरे हैं भय और दुख के। मनुष्य उस सबसे
मुरक्का चाहता है। उनिया को सबसे बड़ी प्रार्थना
दुख मुक्ति की है, लेकिन मंत्र दृष्टि में जीवन में दुख
न आए, यह प्रार्थना कायरतापूर्ण है। दुख और
कठिनायों के बीच में मोबाइल बना रहे, यही
सच्ची प्रार्थना है, जो व्यक्ति को अहंकार से बचाने
वाली और पुरुषार्थी बनाने वाली है।

इच्छा करना एक बात है और इच्छापूर्ति के
उपयोग खोना दूसरी बात। जब तक उपयोग नहीं
लगते, इच्छा पूरी नहीं होती। यदि दुख्याकृति के
उपयोग नहीं किए जाएं तो दुख मुक्त रहने का सपना
भी केवल सपना बनकर रह जाता है। 'रक्षित
पुण्यान् पुरा कृतानि' अर्थात् पहले के किए हुए
पुण्य प्रबल हों तो मनुष्य को दुख से मुक्ति मिल



श्रुते से समान करना पड़े या जल और अग्नि
का प्रकाप, मनुष्य के पुण्य प्रबल हों तो उसे कोई मार
नहीं सकता।

महाभारत में लिखा है, 'धर्मे रक्षति रक्षित
अर्थात् मनुष्य धर्म की रक्षा करे तो धर्म भी
उसकी रक्षा करता है। हमारी व्याख्या के अनुसार
मनुष्य की धार्मिक वृत्ति उसकी सुखरुक्षा करती है।

यह व्याख्या सार्थक भी है। आखिर धर्म अपने
आप में है क्या? वास्तव में धर्म का न कोई नाम
होता है और न कोई रूप। व्यक्ति के आचारण,
व्यवहार या वृत्ति के आधार पर ही उसे धार्मिक
अथवा अधार्मिक होने का प्रमाणपत्र दिया जा
सकता है। श्रीमद भगवत के प्रथम स्कंध में
कुंती का आत्मनिवेदन अत्यत महत्वपूर्ण है।
उसमें मोबाइल बढ़ाने की प्रार्थना के स्थान पर
परिषद विषयों को आमत्रित किया। प्रभो! मेरे पग-पग
पर निरंतर विषयों रहें, यद्योंके मैं जब
विषयोंसे से धिरी रहती हूं, तभी अपके दर्शन
होते हैं। आपके दर्शन मेरे लिए मुक्ति के दर्शन हैं
- मेरे जन्म-मरण की परंपरा को उच्छ्वासन करने
वाले हैं।

धार्मिक व्यक्ति के जीवन में कष्ट नहीं आता।

यह बात नहीं है कि उसे बुढापा, बीमारी या
आपका का सामना नहीं करना पड़ता। बुढापा
आता है, पर उसे सतात नहीं। बीमारी आती है,
पर उसे चायित नहीं करा पाती। इस कथन का
सारांश यह है कि धार्मिक व्यक्ति दुख को सुख
में बदलना जानता है। इसे यों भी कहा जा
सकता है कि धार्मिक वही होता है, जो दुख को
सुख में बदलने की कला जानता है।

यह व्याख्या सार्थक भी है। आखिर धर्म अपने
आप में है क्या? वास्तव में धर्म का न कोई नाम
होता है और न कोई रूप। व्यक्ति के आचारण,
व्यवहार या वृत्ति के आधार पर ही उसे स्पर्श होता है।

बाजार में मिलने वाले तंदूरी कलर
का इत्योमाल करने की बाजाय कश्मीरी
मिक्रों के बीज निकालकर मसाले में
पीस लें, इससे खाने का रंग अच्छा
आता है।

रोटी के बर्तन में अदरक के कुछ
टुकड़े डालें, इससे रोटी नरम और
ताजी बनी रहती है।

बड़ा बनाने के लिए बेसन का थोल
ठीक से महक आ रही है, तो उसे
भी नींबू से साफ करें..

चाकू से महक आ रही है, तो उसे
भी नींबू से साफ करें..

चायज को पीसने से पहले तेल में
थोड़ा फ्राइं कर लें, इससे मसाला
जल्दी पकेगा और खाना भी स्वादिष्ट

बनेगा।

गाजर, हरी मटर, कॉर्न या बीटा को
पकाने समय थोड़ा शक्कर डालें, इससे
इनका नेचुरल फ्लेवर बना रहता है।

बाजार में मिलने वाले तंदूरी कलर
का इत्योमाल करने की बाजाय कश्मीरी
मिक्रों के बीज निकालकर मसाले में
पीस लें, इससे खाने का रंग अच्छा
आता है।

रोटी के बर्तन में अदरक के कुछ
टुकड़े डालें, इससे रोटी नरम और
ताजी बनी रहती है।

बड़ा बनाने के लिए बेसन का थो

